8

''उसके वचन को सुनो''

यीशु का अच्छा मित्र लाजर और उसकी दो बहनें, मरियम और मारथा, यरूशलेम के थोड़ा बाहर बैतनिय्याह में रहते थे। यीशु के उधर से गुज़रते समय उनका घर ही उसका निवास था। एक बार उसके वहां आने पर मार्था ने यीशु और उसके चेलों का स्वागत किया था (लूका 10:38-42)। वह सुनना चाहती होगी कि यीशु क्या कहता है; पर वह ''सेवा करते-करते घबरा गई'' (आयत 40क)।

परम्परा के अनुसार घर की स्त्रियां मेहमानों के लिए खाना तैयार करती थीं, जबकि पुरुष बाहर बैठक में उनके पास बैठते। स्त्रियां आमतौर पर उधर नहीं जाती थीं, जब तक उन्हें कुछ देने या कोई चीज़ लाने के लिए न जाना पड़े। मार्था वही कर रही थी जो परम्परा थी। वह अच्छी मेजबान बनने की कोशिश कर रही थी और उसे लगा कि मरियम को भी ऐसा ही करना चाहिए। मरियम को यीशु के कदमों में बैठ कर उसकी बातें सुनते देख कर मार्था हैरान हो गई होगी। मार्था मरियम को आदमियों के साथ बैठे देख कर ही नहीं, यह देखकर भी हैरान हुई होगी कि खाना तैयार करने के लिए वह अपनी जिम्मेदारी को नज़रअंदाज कर रही है।

मरियम के व्यवहार से परेशान, मार्था ने यीशु से कहा, ''हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिए अकेली ही छोड़ दिया है? सो उस से कह, कि मेरी सहायता करे'' (आयत 40ख)। यीशु का उत्तर इस बात का संकेत देता है कि उसका ध्यान उस खाने के बजाय जो मरियम बना रही थी, अपने वचन का आत्मिक भोजन खिलाने पर था। उसने उत्तर दिया, ''मार्था, हे मार्था तू बहुत बातों के लिए चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तर के भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा'' (आयतें 41ख, 42)।

मरियम द्वारा चुना गया ''उत्तम भाग'' परमेश्वर के वचन के भोजन को लेना होगा। मार्था की रुचि बुरी नहीं थी। वह वही कर रही थी, जिसकी उससे उम्मीद की जा सकती थी। परन्तु मरियम का ध्यान उससे अच्छी बातों पर था। यीशु ने उसे ''उसका वचन सुनने'' से दूर नहीं करना था (आयत 39ख)। यह पहली बार नहीं था जब यीशु ने शारीरिक भोजन के बजाय आत्मिक भोजन को पहल दी। कुएं पर सामरी स्त्री से मिलने के बाद उसके चेले उसके लिए कुछ खाने को लाए, तो उसने कहा ''मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते'' (यूहन्ना 4:32)। बाद में उसने अपनी और अपने संदेश की तुलना ''परमेश्वर की रोटी'' से की ''क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है'' (यूहन्ना 6:33)। वह, वह रोटी थी, जो स्वर्ग से उतरी (यूहन्ना 6:41)।

परमेश्वर आज बात करता है

आराधना की अधिकतर अभिव्यक्तियां जिनका अब तक हमने अध्ययन किया है, वे माध्यम

हैं, जिनके द्वारा आराधक परमेश्वर से बात करता है। पक्का करने के लिए हम प्रार्थना, स्तुति और संगति में भावनात्मक और विषयात्मक ''फीडबैक'' पाते हैं; पर परमेश्वर हमारे साथ पढ़ने, सिखाने या प्रचार करने के द्वारा बोले गए वचन के बिना किसी स्पष्ट रूप में बात नहीं करता।

आज कई जगह प्रचार करने या सिखाने में बिताया गया समय कम करने पर दबाव बनाया जाता है। इस सोच में कोई खूबी मिल सकती है कि प्रचार के लिए दिया गया समय गाने, प्रार्थना करने और प्रभु भोज के लिए दिए गए समय के हिसाब से बांटा जाना चाहिए। साथ ही हमें सावधान रहने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के आराधक से बात करने के महत्व को कम न करें। दो तरफा बातचीत बिना आराधना के पूरी नहीं होती।

मूसा के समय से ही प्रचार लोगों पर अपनी इच्छा प्रकट करने का परमेश्वर का पसन्दीदा माध्यम रहा है। व्यवस्था विवरण में मूसा की मृत्यु से पूर्व व्यवस्था की प्रासंगिकता पर मूसा का संदेश दर्ज है। उसने व्यवस्था को दोहराया ही नहीं बल्कि इसकी व्याख्या करते हुए उस समय की विशेष परिस्थितियों के अनुसार इसे लागू भी किया। बार-बार परमेश्वर ने प्रचार के द्वारा अपने लोगों को वापस लाने के लिए नबियों को भेजा। इतिहास में लोगों ने जब भी व्यवस्था को पढ़ने और नबियों की सुनने में आना-कानी की तो वे धर्म-त्याग के घोर अन्धकार में गिर गए। उनमें से एक अन्धकर यहूदा के लिए सत्तर साल तक रहा।

बाबुल की दासता के सत्तर साल बाद परमेश्वर ने अपने लोगों को यरूशलेम में वापस लाने, मन्दिर को बनाने और उनके कौमी और आत्मिक जीवन को बहाल करने के लिए जरूब्बाबेल, राजा और नहेम्याह को भेजा। जब काम रुक गया तो परमेश्वर ने उन्हें अपने काम पर वापस बुलाने के लिए हाग्गै और जकर्याह को भेजा (एज्रा 4:24-5:2)। यह बहाली परमेश्वर के वचन में वापस आए बिना नहीं होनी थी।

उस जमाने में हर घर में लिखित वचन की प्रति नहीं होती थी। प्रतियां हाथों से लिखकर बनाई जाती थीं। केवल कुछ प्रतियां होती थीं और वे भी शास्त्रियों और धार्मिक अगुओं के पास मिलती थीं। बाबुल में परमेश्वर के लोगों ने बिना वचन सुने बहुत समय बिता दिया था। यरूशलेम की शहरपनाह गिरने के समय वापस आने वाले लोगों को व्यवस्था को पढ़ने के लिए इकट्ठा होने के लिए बुलाया गया था। व्यवस्था के पढ़े जाने के समय इसके अनुवाद तथा व्याख्या के लिए एज्रा के साथ तेरह जन खड़े हुए ताकि लोगों को समझ आ सके। एज्रा ने सुबह से, दोपहर तक पढ़ना जारी रखा और लोग ध्यान से उसकी सुनते रहे। जब उन्होंने वचन को पढ़ते सुना तो वे रोए। स्पष्टतया परमेश्वर के वचन ने उनके मनों को निरुत्तर किया था और उन्हें विश्वास दिलाया था कि उन्हें उसकी इच्छा के साथ मेल खाना आवश्यक है (नहेम्याह 8:1-9)।

प्रचार का महत्व इस एक तथ्य में देखा जाता है कि परमेश्वर का पुत्र प्रचारक था। उसके प्रेरित प्रचारक थे। मसीहियत में परिवर्तित होने वाले सबसे पहले लोग प्रचार के द्वारा ही बदले थे (प्रेरितों 2)। यीशु की अन्तिम आज्ञा, जाकर चेले बनाने और उन सब आज्ञाओं को मानना सिखाने के लिए थी (मत्ती 28:18-20)। प्रेरित पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि उसे ''सुसमाचार सुनाने'' (1 कुरिन्थियों 1:17क) के लिए भेजा गया था, क्योंकि ''परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे'' (1 कुरिन्थियों 1:21)। सिखाने और प्रचार करने के द्वारा कलीसियाएं बन रही थीं (और हैं)।

कलीसिया में परमेश्वर द्वारा ठहराई गई भूमिकाओं को *निभाने वाले* सभी पांचों (प्रेरित, भविष्यवक्ता, सुसमाचार सुनाने वाले, रखवाले और शिक्षक; इफिसियों 4:11) प्रचार करने और सिखाने की भूमिकाएं हैं। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, ''तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, हर प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा'' (2 तीमुथियुस 4:2)। प्रचार करने या सिखाने को कम करने का अर्थ उन माध्यमों को कम करना है, जिनके द्वारा परमेश्वर की आवाज सुनी जाती है।

अपने रास्ते को रौशन करना

हमें लग सकता है कि लिखित रूप में नये नियम के पूरा होने से पहले के दिनों में वचन के बोले जाने की अधिक आवश्यकता थी। कलीसिया नई-नई थी और सीखने को बहुत कुछ था। परमेश्वर अपनी प्रेरणा दिए हुए प्रेरितों और भविष्यवक्तओं के द्वारा अपने वचन को प्रकट कर रहा था। लोग सुनने को उत्सुक थे, परन्तु परमेश्वर की बात सुनने के अवसर कम थे।

क्या आज वचन की कम आवश्यकता है? क्या बोले गए वचन को कम करने से हम धर्म त्याग की एक और काली रात में चले जाएंगे? बोला गया वचन हमारी आराधना में सुधार लाता है या हमें परमेश्वर के और निकट लाता है? दाऊद ने घोषणा की थी, ''तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है'' (भजन संहिता 119:105)। जीवन में से चलना रात के समय बारूद बिछे मैदान के बीच में से चलने की तरह है। सुरक्षित मार्ग के साथ-साथ चिह्न तो लगे हैं पर सुरक्षित रास्ता दिखाने के लिए खूब रौशनी होनी आवश्यक है। क्या हम कम रौशनी वाले या बिना रौशनी वाले बारूद बिछे मैदान में से निकलने की कोशिश करते हैं? मुझे तो तेज रौशनी चाहिए, जिससे मैं किसी भी खतरनाक रुकावट को जो शत्रु ने मेरे आगे रखने की कोशिश की है, देख सकूं! इस रास्ते से हमें ले जाने के लिए एकमात्र प्रकाश परमेश्वर का वचन है। जो कोई बिना इस प्रकाश के जीवन में से गुजरने का प्रयास करता है, वह बड़ी खतरनाक स्थिति में है।

अफ्रीका के कुछ भागों में सबसे खतरनाक सांपों में से एक पफ़ एडर नामक सांप है। दिन के समय यह सांप कहीं दिखाई नहीं देता पर रात के समय निकलना पसंद करता है। यह धीमा, परन्तु हवा से भरा प्राणी अपने बड़े शरीर को बड़े प्रयास से सिकोड़ लेता है; सो इसे बनी हुई पगडण्डी अच्छी लगती है, जिस पर से लोग गुजरते हैं। पफ़ एडर तब तक किसी को काटता या उस पर हमला नहीं करता जब तक कोई उसे छेड़ता नहीं, और कई बार जब कोई रात के समय उस रास्ते से गुजरता है और उसे सांप दिखाई नहीं देता और अचानक उस पर पैर रखने से ऐसा हो ही जाता है। आवश्यक नहीं कि पफ़ एडर के काटने से व्यक्ति मर जाए पर उसे अपना पांव या टांग गंवानी पड़ सकती है। उसके काटने से हुआ घाव बड़ी मुश्किल से ठीक होता है; कई बार ज़हर के असर से बचने के लिए शरीर के प्रभावित अंग को काटना पड़ता है। रात को वहां से गुजरने वालों के पास टॉर्च (या फ्लैश लाइट), या चांद की रोशनी न होने पर खतरा हो सकता है। आत्मिक तौर पर कहें तो आराधना से हमारी टॉर्चें फिर जलनी चाहिए। हमारी बैटरियां चार्ज होनी चाहिए और हमारी लालटेनें जल उठनी चाहिए। आराधना के हमारे समय के दौरान वचन में ऐसा कुछ नहीं पाया जा सकता।

हमारे असली स्वभाव की झलक

हम पहले ही देख चुके हैं कि यहूदा ने बहाल होकर परमेश्वर के वचन को पढ़ा और उसकी व्याख्या की (नहेम्याह 8) और वे रोए। याकूब 1:21-25 यह बताता है कि वचन के खोले जाने पर कुछ लोग क्यों रोए और कुछ क्यों नहीं रोए। वचन केवल वह झरोखा नहीं है, जिसमें से हम परमेश्वर को देखते हैं और वह रोशनी ही नहीं है जो जीवन के पथ पर चलने में हमारी अगुआई करता है, बल्कि यह वह दर्पण भी है, जिससे हमारे असली स्वभाव की झलक मिलती है। जब हम ''बोए गए वचन को दीनता से ग्रहण कर लेते हैं, जो हमारा उद्धार कर सकता है'' तो हम ''हम वचन के सुनने वाले ही नहीं इसके मानने वाले'' हो जाते हैं। दूसरी ओर जो व्यक्ति ''वचन का सुनने वाला हो, और उस पर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है'' और उसके सामने से हटने के बाद भूल जाता है कि वह कैसा दिखता है (याकूब 1:21-24)। वचन उसके स्वभाव को दिखाता तो है पर वह ध्यान नहीं देता। उसे कुछ बुरा नहीं लगता, गलतियों को सुधारने का कोई निर्णय नहीं लेता और न अपनी स्थिति पर पश्चाताप के आंसू बहाता है। जब परमेश्वर के लोगों ने व्यवस्था को पढ़े जाने पर सुना तो उन्होंने अपने आप को वैसे ही देखा जैसे वे थे और उन्हें अपनी शक्ल अच्छी नहीं लगी। वे इस बात से परेशान थे कि वे परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मान रहे थे।

वही प्रकाश जो हमारे मार्ग को रौशन करता है, हमारी कमियों को भी दिखाता है। यह हमारे ऊपर चमकने के साथ-साथ आगे के मार्ग पर भी रौशनी डालता है। जितना हम प्रकाश के निकट जाएंगे उतनी ही हमारी कमियां उभर कर दिखाई देंगी। हम अपनी कमियों को छिपाने के लिए प्रकाश के पास जाने से बच सकते हैं या उन्हें पहचानने और सुधार के लिए प्रभु के सामने लाने के लिए प्रकाश के निकट आ सकते हैं। वचन के प्रचार करने या सिखाने के द्वारा की गई आराधना हमें प्रकाश में लेकर आती है।

हमारे विश्वास को पक्का करना

रोमियों 10:17 कहता है, ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से आता है।'' परमेश्वर में सच्चा विश्वास उसके वचन के ज्ञान से ही आ सकता है। अपने चेलों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए यीशु ने कहा, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। इब्रानी मसीहियों पर बच्चे होने का आरोप लगाया गया था, क्योंकि उन्हें ''धर्म के वचन की पहचान नहीं'' थी (इब्रानियों 5:13ख)। लेखक ने पहले उनसे कहा, ''इस कारण चाहिए, कि हम उन बातों पर जो हमने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहक कर उनसे दूर चले जाएं'' (इब्रानियों 2:1)।

लगातार परमेश्वर के वचन के सामने आए बिना हम प्रभु में बढ़ नहीं सकते। वचन हमारी रूह की खुराक है। केवल परमेश्वर के पुत्र का ज्ञान ही हमें परिपक्वता के अपेक्षित स्तर तक ला सकता है, ''मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं'' (इफिसियों 4:13)। पौलुस ने कहा:

> ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई के उन के भ्रम की युक्तियों और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों का, और उपदेश की, हर एक बयार

से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों। बरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं (इफिसियों 4:14, 15)

वचन को ग्रहण करने की आराधना प्रभु में बड़े होने का बढ़िया ढंग है।

सारांश

कई बार मसीही लोगों में ''प्रचार कम और आराधना अधिक करने'' की विनती की जाती है। इस विनती का अर्थ है कि प्रचार करना या सिखाना आराधना से थोड़ा अलग है। बाइबल के अनुसार प्रचार पर आराधना के संदर्भ में विचार किया जाना चाहिए। आराधना सभा से वचन के पढ़ने और सुनाने के लिए सबसे उपयुक्त माहौल मिलना चाहिए। परमेश्वर के वचन के प्रचार और शिक्षा को उसके सच्चे मन से आराधना करने वालों में पहल दी जानी चाहिए।

बीज बोने वाले का दृष्टांत बताने के बाद यीशु ने प्रश्न करने वाले अपने चेलों को बताया कि ''बीज तो परमेश्वर का वचन है'' (लूका 8:11)। इस दृष्टांत को ''हृदयों का दृष्टांत'' कहा जाना चाहिए। यीशु वास्तव में बीज बोने की शिक्षा नहीं दे रहा था, वह तो हृदय की किस्म बता रहा था, जो वचन को ग्रहण करने के लिए आवश्यक है। बीज हर जगह बोया जाता है यानी हर प्रकार की भूमि पर गिरता है जो सब प्रकार के हृदयों को दर्शाता है। *अच्छी* भूमि या हृदय वह है जो वचन को ग्रहण करके इसे बढ़ने और फल देने देता है। यह सच्चे, अर्थात परमेश्वर के गम्भीर आराधक का हृदय ही होगा।